Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with*
International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2503I3VXIIIP0002

e-ISSN No. 2394-8426
Monthly Issue
MAR-2025
Issue–III, Volume–XIII

पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का उनके बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. राजकुमारी गजपाल,
अतिथि व्यख्याता, समाजशास्त्र विभाग,
शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय, अर्जुन्दा, (बालोद)

सारांश

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की धूरी है, जिस पर उसके विकास का चक्र घूमता है, राष्ट्र जन मानसिक क्षितिज का विस्तार देकर, उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में कार्य सक्षम बनाना शिक्षा का उपहार है। शिक्षा को मानवीय जीवन का ज्योतिर्मय पक्ष माना है, जिससे मानव के व्यक्तित्व का चतुर्मुखी विकास होता है। शिक्षा मानव के बौद्धिक तथा सामाजिक विकास में जन्म से चल रही प्रक्रिया है। मानव जन्म से लेकर मृत्यु तक जो कुछ सीखता है या करता है वह शिक्षा के माध्यम से ही करता है। प्राचीन काल में शिक्षा को न तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची माना गया और न ही जीवकोपार्जन का साधन है वरन् शिक्षा को वह प्रकाश माना गया है जो व्यक्ति को उत्तम जीवन व्यतीत करने व मोक्ष प्राप्त करने का साधन माना है।

पलायन और बच्चों की षिक्षा में धनात्मक संबंध होता है अर्थात् पलायन के दर में वृद्धि से निरक्षता में भी वृद्धि होती है, क्योंकि सामान्यतौर पर पलायन नंवबर से मार्च माह के बीच किया जाता है और इस अवधि में बच्चे स्कूल में पढ़ रहे होते हैं और पलायन करने पर उनकी पढ़ाई बीच में ही छूट जाती है और ये मजदूर जिन महानगरों या छोटे नगरों में प्रवास करते हैं, वहां यह संभव नहीं हो पाता कि ये बच्चों को दाखिला दिला सकें, क्योंकि इन बच्चों की षिक्षा का प्रबंध कोई भी विद्यालय द्वारा नहीं किया जा सकता है, परिणामतः बच्चे केवल छोटे बच्चों की रखवाली और खाना बनाने के कार्य में संलग्न रह जाते हैं और यहीं से निरक्षरता की षुरूआत होती है। यह सिलसिला लगातार कुछ वर्षों (5–10) तक चलने के बाद स्वाभाविक रूप से बाल श्रमिक के रूप में बदलकर बंद हो जाती है। वह बच्चा फिर दुबारा स्कूल जाने के विषय में सोच भी नहीं पाता है, इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन हेतु इस विषय का चुनाव किया गया है।

प्रस्तुत शाोध प्रबंध "पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के समाजिक–आर्थिक स्थिति का उनके बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" शोधकर्ता द्वारा इस समस्या के समाधान के लिए अध्ययन किया गया, जिसके द्वारा पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के समाजिक–आर्थिक स्थिति का उनके बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन की वास्तविक स्थिति की प्राप्ति होगी।

01. पलायन का अर्थ :–

पलायन शब्द का प्रयोग प्रवास के संदर्भ में ही किया जाता है क्योंकि पलायन शब्द की कोई पृथक व्याख्या उल्लेखित नहीं मिलती है। वास्तव में पलायन भागने की प्रवृत्ति की ओर इशारा करता है। जब कोई व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों से विमुख होता है, तो इसे ही पलायनवादी प्रवृत्ति कहा जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य के श्रमिकों के प्रवास को पलायन की प्रवृत्ति से जोड़कर देखा जाता रहा है क्योंकि यहां के लघु व सीमांत कृषक तथा भूमिहीन मजदूर मूलनिवास के आस–पास रोजगार की संभावनाओं को तलाशने के स्थान पर सीधे ही देश व राज्य के बड़े नगरों की ओर रोजगार की तलाश में पलायन करते है, चूंकि विगत कई वर्षों से पलायन की प्रवृत्ति इन्हें आदतन पलायनकर्ता बना चुकी है परिणामतः चाहे परिस्थितियां सामान्य हो, अच्छी बारिश हो, रोजगार उपलब्ध हो तो भी ये राज्य या राज्य के बाहर प्रवास करते है और इसी प्रवृत्ति

को पलायन कहा जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में पलायन से संबंधित सभी अवधारणाओं की व्याख्या प्रवास की सैद्धातिक व्याख्या एवं अवधारणाओं को ध्यान में रखकर किया गया हैं।

02. अध्ययन का महत्व –

बच्चों के विकास में सबसे महत्वपूर्ण योगदान शिक्षा का है, शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है, जो बालक के विकास के प्रत्येक पक्ष में सच्चा पथ प्रदर्शन करती है और यदि बालक के परिवार आर्थिक समस्या से ग्रसित है, तो उनके लिये शिक्षा कैसे विकास का कारण बन सकता है। इस तरह आज शोशित, दलित व मजदूर वर्ग के बच्चों के समक्ष अनेक समस्याएं होने के कारण वे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

पलायन एक स्वाभाविक मानवीय प्रक्रिया है। जो आदिकाल से चला आ रहा है। प्रवास में सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही कारण विद्यमान होते है। जहॉ सकारात्मक कारण समाज के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वही नकारात्मक कारण अनेक समस्याओं को ही जन्म देता है और इन समस्याओं के समाधान के द्वारा ही हम सामाजिक विकास को एक दिशा प्रदान कर सकते है। प्रश्न जहां तक छत्तीसगढ़ राज्य के कृषि मजदूरो के पलायन का है, जो राज्य बनने के बाद से ही सुर्खियों में रहा है। छत्तीसगढ़ शासन के वार्षिक प्रतिवेदन 2007 के अनुसार राज्य में लगभग 43 प्रतिशत परिवार गरीबी रेखा के नीचे गुजर बसर करता है। प्रवास का संबंध जनसंख्या के इसी भाग से है। ऐसी परिस्थिति में इस विषय पर किया जाने वाले शोध कार्य इसे समसामायिक बनाता है।

03. संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन –

प्रस्तुत शोध समस्या के अतंर्गत अधिकांश शोध कार्य विभिन्न राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय शोध सम्मेलनों में प्रस्तुत किए गये शोध पत्र के रूप में ही देखने को मिलता है। इन शोध साहित्यों के अध्ययन के पश्चात् शोधार्थी द्वारा अपने शोध विषय को अधिक सार्थक बनाने का प्रयास किया गया है, ताकि शोध के परिणाम सत्य एवं वास्तविकता के अधिक निकट हो। शोधार्थी द्वारा जिन शोध साहित्यों की सहायता ली गई है, उनका विवरण निम्नानुसार है –

अली सैयद (2007) का अध्ययन हैदराबाद के मुस्लिम समुदाय के युवा सदस्यों के प्रवास पर आधारित रहा है। अध्ययन इस बात पर प्रकाष डालता है, कि सूचना प्रौद्योगिकी तथा कम्प्यूटर के क्षेत्र में बढ़ती रोजगार के संभावनाओं के कारण आज युवा पीढ़ी अमेरिका, सऊदी अरब जैसे देषों में बड़ी संख्या में प्रवास कर रहे हैं। उनके प्रवास किये जाने के फलस्वरूप उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति सांस्कृतिक मान्यताओं तथा सामाजिक संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ता है। अध्ययन से ज्ञात तथ्य यह बताता है कि युवा सदस्यों के पष्चिमी देषों में प्रवास के फलस्वरूप परिवार के सामाजिक आर्थिक स्थिति बेहतर होती है पर इससे सामाजिक सांस्कृतिक मान्यतायें प्रभावित होती है।

एकएलन एण्ड अदर (2008) इस बात पर आधारित था कि किस प्रकार प्रवास का युवा महिलाओं के मनोवैज्ञानिक प्रकृति, सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा भविष्य पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है। अध्ययन दक्षिणी फिनलैण्ड पर आधारित था। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि प्रवास ग्रामीण युवाओं की सामाजिक–आर्थिक बेरोजगारी स्वास्थ्य की स्थिति पर गहरा प्रभाव डालता है।

यादव, (2012) ने श्रम पलायन करने वाले परिवारों में बच्चों की षैक्षिक समस्या पर एक अध्ययन (कसडोल विकासखण्ड के विषेष संदर्भ में) ने अपने अध्ययन में कृषि श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले पलायन के कारण परिवारों में बच्चों की षैक्षिक समस्या को स्पष्ट किया है। इस अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार हैं – निष्कर्ष से यह कहा जा सकता है,कि श्रम पलायन करने वाले परिवारों की सामाजिक – आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं कहा जा सकता हैं। इस प्रकार श्रम पलायन करने वाले परिवारों की सामाजिक – आर्थिक स्थिति का प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ता है। 81 प्रतिशत उत्तरदाता सपरिवार प्रवास करते है। श्रम

पलायन करने वाले परिवारों में पलायन करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। श्रम पलायन करने वाले परिवारों में बच्चों की शैक्षिक स्थिति संतोषजनक नहीं कहीं जा सकती है,इस प्रकार श्रम पलायन करने वाले परिवारों के बच्चों में षिक्षा की समस्या है। 49 प्रतिशत अभिभावक ने यह भी बतलाया है,कि उनके परिवार के लोंगों की रूचि शिक्षा के प्रति नहीं है,श्रम पलायन करने वाले परिवारों की शैक्षिक स्थिति संतोषजनक नहीं कहीं जा सकती है।

क्राय, केलविन (2009) यह अध्ययन स्वीडन में परिवार के युवा सदस्य के प्रवास का परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, लिंग संरचना पर पड़ने वाले प्रभाव पर आधारित है। अध्ययन यह दर्षाता है,कि युवा सदस्यों के प्रवास से घर की स्थिति तो मजबूत होती है पर वृद्ध सदस्यों को अकेलेपन का सामना करना पड़ता है।

जिमर, जैकरी (2013) का अध्ययन युवा प्रवासियों द्वारा अपने माता–पिता को दिये जाने वाले सहायता पर आधारित है। अध्ययन यह दर्षाता है कि अंतर्राष्ट्रीय प्रवास की स्थिति में युवा सदस्य अपने माता–पिता को अधिक आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं जबकि देश के भीतर प्रवास करने पर कम मदद कर पाते हैं।

04. अध्ययन के उद्देश्य –

शोधकर्ता द्वारा ली गई षोध समस्या के अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया है –

1. पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की पलायन करने की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।

05. अध्ययन की परिकल्पनायें –

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधकर्ता अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है –

- **H1** – पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की आर्थिक स्थिति निम्न हो सकती है।
- **H2** – पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की सामाजिक स्थिति निम्न हो सकती है।
- **H3** – पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों में पलायन करने की प्रवृत्ति हो सकती है।

06. अध्ययन की परिसीमाएँ –

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिसीमाएँ निर्मित की हैं –

1. प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु दुर्ग जिले का चयन किया गया है।
2. अध्ययन हेतु दुर्ग जिले के अंतर्गत धमधा तहसील का चयन किया गया है।
3. अध्ययन हेतु धमधा तहसील के दस गॉवों का चयन किया गया हैं।
4. अध्ययन हेतु धमधा तहसील के दस गॉवों में से कुल 100 पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों का चयन किया गया है।
5. यह अध्ययन पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों तक ही सीमित है।
6. प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के लिए स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से जानकारी प्राप्त किया गया है।

07. शोध प्रविधि –

7.1. शोध विधि – प्रस्तुत लघुशोध समस्या के अध्ययन के लिए शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

7.2. जनसंख्या –

जनसंख्या या समिष्ट एक सांख्यिकीय संकल्पना है, जिनका होता है, "बहुत सी इकाईयों का वृहद समूह" जिनमें से कुछ इकाइयॉं अध्ययन के लिए चुना जाता है अर्थात् सार्वभौम का वह भाग जिसका शोधकर्ता उपयोग करना चाहता है। अतः जनसंख्या इकाईयों का समूह होता है।

इस प्रकार जनसंख्या इकाईयों के समूचे समूह को जिसके लिए चर का मान निकालना अभीष्ट जनसंख्या कहते हैं। उदाहरण – रक्त परीक्षण में शरीर का संपूर्ण रक्त जनसंख्या है। शोधकर्ता को अपने समस्या के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए जनसंख्या का अध्ययन करना आवश्यक है। जनसंख्या हेतु दुर्ग जिले के अंतर्गत धमधा तहसील के अंतर्गत दस गांवों का चयन किया गया है। जिसमें जनसंख्या के लिए 456 पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों को शामिल किया गया है।

7.3. न्यादर्श :–

जब किसी जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछेक इकाईयों को चुन लिया जाता है, तो इसे चुनने की क्रिया को न्यादर्श कहते हैं तथा चुनी हुई इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं।

प्रस्तुत लघुशोध के उद्देश्य की पूर्ति के लिए फिंगे दुर्ग जिले के अंतर्गत धमधा तहसील के अंतर्गत दस गांवों के पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों का चयन किया गया है। जिसके द्वारा पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के आर्थिक स्थिति का उनके बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। लघु शोध अध्ययन हेतु दुर्ग जिले के अंतर्गत धमधा तहसील के अंतर्गत दस गांवों के पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि से किया गया है। जिसके अन्तर्गत समस्या के समाधान हेतु 100 पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों का न्यादर्श हेतु चयन किया है। इनमें से प्राप्त परिणाम समग्र का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करेगें।

तालिका 1.2

न्यादर्श के अतंर्गत पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की संख्या

क्र.	चयनित गांव का नाम	पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की कुल संख्या	चयनित पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की कुल संख्या
01	अहेरी	37	10
02	अकोला	41	10
03	बरहापुर	33	10
04	चीचा	41	10
05	दनिया	53	10
06	दारगांव	39	10
07	गिरहोला	67	10
08	गोढ़ी	63	10
09	कपसदा	31	10
10	खेरधा	51	10

कुल योग	456	100

08. उपकरण –

किसी भी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन तथा अज्ञात पदों को संकलित करने के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। अनुसंधान में किसी भी प्रकार के आंकड़ों के मापन के लिए एक अच्छा योग्य उपकरण का उपयोग करते हैं अर्थात प्रदत्तों को संकलित करने के लिए जिन उपकरणों या क्षेत्रों का उपयोग करते है, उन्ही क्षेत्रों को ही उपकरण कहते है। सफल अनुसंधान के लिए उपयुक्त क्षेत्रों अथवा उपकरण के चयन का अत्यधिक महत्व है। प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित उपकरण साक्षात्कार– अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

09. सांख्यिकीय अभिप्रयोग –

सांख्यिकीय अनुसंधान का मूल आधार है। अनुसंधान प्रक्रिया में चयनित प्रतिदर्शों के द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया है और सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के अध्ययन मं प्रतिशत विधि का प्रयोग समीक्षात्मक अध्ययन के लिए किया गया है। "पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के आर्थिक स्थिति का उनके बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन "करने के लिए स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया जाएगा, जिसमें अधिकतर (हां/नहीं) वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। इसके लिए संकलित प्रदत्तों को सारणीकृत किया गया और प्रदत्तों द्वारा प्राप्त आंकड़ों का योग कर प्रतिशत निकाला गया है। इसके लिए संकलित प्रदत्तों को सारणीकृत किया गया। प्रदत्तों द्वारा प्राप्त आंकड़ों का योग कर प्रतिशत निकाला गया है।

10. परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम –

Ho1 – पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की आर्थिक स्थिति निम्न हो सकती है –

सारणी क्रमांक 1.1

पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की आर्थिक स्थिति से संबंधित विवरण

क्रमांक	कथन	हॉ की संख्या	नहीं की संख्या	हॉ की कुल संख्या प्रतिशत में
1.	क्या आपके पास स्वयं का मकान है?	100	00	100
2.	क्या आपके पास स्वयं की कृषि करने योग्य कृषिभूमि है ?	59	39	59
3.	क्या आप दूसरों के खेतों में जाकर काम करते हैं ?	89	11	89
4.	क्या आपको पूरे वर्षभर काम मिलता है?	40	60	40
5.	यदि नहीं तो कितने माह काम करते हैं ?			
	• 3 माह	60	40	60
	• 6 माह	20	80	20
	• 8 माह	12	88	12
	• 10 माह	08	92	08

6.	क्या आपके परिवार के सभी सदस्य काम पर जाते हैं ?	87	13	87
7.	क्या आपको निर्धारित समय पर मजदूरी मिल जाती है ?	69	41	69
8.	क्या आप प्राप्त मजदूरी से परिवार का भरण–पोषण हो जाता है ?	60	40	60
9.	क्या आप कृषि मजदूरी के अलावा और कोई अन्य काम करते हैं ?	50	50	50
10.	क्या आपके बच्चों को भी घर खर्च के लिए काम करना पड़ता है?	30	70	30
11.	क्या आप अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए खर्च करते है ?	82	28	82
12.	क्या आपके बच्चों को पढाई के लिए पर्याप्त वातावरण मिलता है ?	71	29	71

व्याख्या –

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं के आर्थिक स्थिति संबंधी उपरोक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि शतप्रतिशत उत्तरदाताओं के पास स्वंय का मकान है। सर्वाधिक 59 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास कृषि योग्य भूमि है, पर भूमि का आकार छोटा होने के कारण अधिकांष कृषि श्रमिक दूसरों के खेत पर कार्य करने जाते है। वर्षभर रोजगार के विषय मे केवल 40 प्रतिशत उत्तर दाताओं ने ही वर्षभर रोजगार मिलना बतलाया है, अधिकांश 60 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि उन्हे वर्ष भर रोजगार नही मिलता है। वर्षभर रोजगार नही मिलने की अवधि की विषय मे 60 प्रतिशत मे से 60 प्रतिशत ने 3 माह, 20 प्रतिशत ने 6 माह, और 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 8 माह जबकि 8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 10 माह रोजगार मिलने की जानकारी दिया है। 87 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि परिवार के सभी सदस्य काम पर जाते है, कार्य के मजदूरी के विषय में 69 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि उन्हें समय पर मजदूरी मिलती है,प्राप्त मजदूरी से परिवार का भरण–पोषण होने के विषय में सर्वाधिक 60 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि प्राप्त आय परिवार के भरण–पोषण के दृष्टि से पर्याप्त है।

50 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के अतिरिक्त मजदूरी का भी कार्य करते है 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह भी बतलाया है कि उनके बच्चे घर खर्च के लिए काम करते है। बच्चों की पढ़ाई पर खर्च करने के विषय में अधिकांश 82 प्रतिशत उत्तरदाता बच्चों की पढ़ाई पर व्यय करते है। इसी प्रकार 71 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि वे अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए पर्याप्त वातावरण उपलब्ध कराते है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है, कि पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की की आर्थिक स्थति संतोषजनक नहीं कही जा सकती है। इस प्रकार पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की की आर्थिक स्थिति का प्रभाव बच्चों की षिक्षा पर पड़ता है। अतः परिकल्पना की पुष्टि होती है।

Ho2 – पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की सामाजिक स्थिति निम्न हो सकती है –

सारणी क्रमांक 1.2

पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की सामाजिक स्थिति से संबंधित विवरण

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with*
International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2503I3VXIIIP0002

e-ISSN No. 2394-8426
Monthly Issue
MAR-2025
Issue–III, Volume–XIII

क्रमांक	कथन	हॉं की संख्या	नहीं की संख्या	हॉं की कुल संख्या प्रतिशत में
1	क्या आप लड़की की अपेक्षा लड़कों को अधिक पढ़ाना चाहते है ?	41	59	41
2	क्या आप बाल–विवाह के पक्ष में है ?	27	73	27
3	क्या आपके गांव में हमेषा गंदगी रहती है?	37	63	37
4	क्या आपके गांव के अधिकांष लोग नशा करते हैं ?	79	31	79
5	क्या आप परिवार के सदस्यों के बीच नशा पान करतें है ?	31	79	31
6	क्या आप के परिवार के सभी लोग नशापान करते है ?	29	71	29
7	क्या आपके गांव के अधिकांश बच्चें नशापान करते है ?	11	89	11
8	क्या आपके गांव में निम्नलिखित कि व्यवस्था है ? 1. शुद्ध पेय जल 2. बिजली 3. सड़क 4. नाली	 100 100 100 75	 00 00 00 25	 100 100 100 75

व्याख्या –

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं के सामाजिक स्थिति संबंधी उपरोक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि गाँव, परिवार एवं सदस्य एवं बच्चों में नषा–पान की प्रवृत्ति संबंध से यह ज्ञात हुआ है कि अधिकांश उत्तरदाता यह मानते है कि नशा–पान गाँव के ज्यादातर लोग नषा–पान करते है। उनके परिवार के 31 प्रतिशत सदस्य व 29 प्रतिशत बच्चे भी नशा–पान करते है।गाँव में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं के विषय में शत् प्रतिशत उत्तरदाताओं शुद्ध पेय जल,बिजली और सड़क का उचित प्रबंध होना बतलाया है, जबकि 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नाली की भी व्यवस्था होने की जानकारी दिया है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की की सामाजिक स्थति संतोषजनक नहीं कही जा सकती है। इस प्रकार पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की सामाजिक स्थिति का प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ता है। अतः परिकल्पना की पुष्टि होती है।

H03– पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों में पलायन करने की प्रवृत्ति हो सकती है –

सारणी क्रमांक 1.3

पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की पलायन करने की प्रवृत्ति से संबंधित विवरण

क्र.	कथन	हॉं की संख्या	नहीं की संख्या	हॉं की कुल संख्या प्रतिशत में

1.	क्या आप और आपके परिवार के सभी लोग पलायन करते है ?	75	25	75
2.	क्या आपके बच्चे भी पलायन करते हैं ?	52	48	52
3.	क्या आपके पलायन से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है ?	73	37	73
4.	आपके गांव में प्रतिदिन मजदूरी दर क्या है – अ. 150 ब. 200 स. 250	 44 35 21	 56 65 79	 44 35 21
5.	क्या आप मिलने वाली मजदूरी से संतुष्ट हैं –	47	63	47
6.	क्या मूल निवास में वर्ष भर मजदूरी मिलती है	43	67	43
7.	यदि नहीं तो वर्ष में कितने माह मजदूरी का कार्य मिलता है – • 3माह • 6 माह • 8 माह • 10 माह	60 30 20 10	40 70 80 90	60 30 20 10
8.	सामान्यत : मजदूरी किस माह से किस माह तक मिलती है – जुलाई से अक्टुबर तक	79	31	79
9.	वर्ष भर मजदूरी न मिलने के क्या कारण है – • कम वर्षा का होना • मरेगा कार्यक्रम का संचालन ठीक से ना होना	 59 49	 41 61	 59 49
10.	वर्ष भर मजदूरी नहीं मिलने पर क्या आप दूसरी जगह प्रवास करते हैं	48	52	48
11.	प्रवास स्थल पर किस प्रकार के कार्य करते हैं – • कुशल मजदूर • अकुशल मजदूर	 59 39	 41 61	 59 39
12.	आप किस प्रकार के उद्योग में कार्य करते हैं – • ईट भट्ठा • भवन निर्माण	 67 33	 33 67	 67 33
13.	प्रवास स्थल पर दयनीय आवास व्यवस्था में कार्य करते हैं –	21	79	21

14.	प्रवास स्थल पर स्वास्थ्य सेवाऐं खराब रहती है –	71	29	71
15.	प्रवास स्थल पर कार्य स्थल की दषा कैसी रहती है – • अच्छा • खराब	 62 48	 38 52	 62 48
16.	प्रवास स्थल पर दुर्घटना पर मुआवजा मिलता है –	82	12	82
17.	क्या प्रवास से आपके आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुआ है?	22	78	22
18.	क्या आप से आपके जीवन स्तर में वृद्धि हुई है?	24	76	24
19.	क्या प्रवास के कारण आपके बच्चों की शिक्षा प्रभावित हुई है?	60	40	60
20.	मूल निवास में आपकी बचत होती है?	34	66	34

व्याख्या :–

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं के पलायन की प्रवृत्ति संबंधी उपरोक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि 75 प्रतिशत उत्तरदाता सपरिवार पलायन करते है, 52 प्रतिशत उत्तरदाता यह भी मानते है कि उनके साथ बच्चे भी जाते है। 73 प्रतिशत उत्तरदाता यह भी मानते है कि पालयन से बच्चे की शिक्षा प्रभावित होती है। अधिकांश 67 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि वर्ष भर मजदूरी नही मिलती है। इसमें से 60 प्रतिशत ने वर्ष में 3 माह मजदूरी मिलना बताया है, 30 प्रतिशत ने 6 माह और 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 8 माह मजदूरी गाँव मिलना बताया है।

गाँव में प्रतिदिन मजदूरी संबंधी अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि 44 प्रतिशत उत्तरदाता 150 रू. प्रतिदिन मजदूरी प्रदान करते है, 35 प्रतिशत उत्तरदाता 200 रू. जबकि 21 प्रतिशत उत्तरदाता 250 रू. से अधिक मजदूरी प्राप्त करते है, 47 प्रतिशत उत्तरदाता मिलने वाली मजदूरी से संतुष्ट है। 43 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि गाँव में वर्ष भर मजदूरी मिलती है। पर मजदूरी मिलने का यह माह संबंधी अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि 79 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने मजदूरी जुलाई माह से अक्टूबर माह तक मिलता बताया है। वर्ष भर मजदूरी नही मिलने के कारणों में वर्षा का अभाव तथा राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना का सही संचालन नही होना मुख्य कारण है।

वर्ष भर मजदूरी के अभाव में 48 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पलायन करने की जानकारी दिया है। अधिकांश 59 प्रतिशत पलायन स्थल पर कुषल मजदूर के रूप में कार्य करते है। प्रवासी श्रमिक मुख्य रूप से भवन निर्माण और ईंट भट्ठे में काम करते है। बहुत कम उत्तरदाता प्रवास स्थल पर आवास व्यवस्था को दयनीय मानते है, लेकिन 71 प्रतिशत उत्तरदाता यह अवश्य मानते है कि प्रवास स्थल में स्वास्थ्य सेवाएँ खराब होती है। कार्य की दषा के विषय 62 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अच्छी कार्य दषा की जानकारी दिया है। जबकि 48 प्रतिशत ने खराब दषा की जानकारी दिया है। 82 प्रतिशत श्रमिक यह मानते है कि दुर्घटना मुआवजा प्रवास स्थल पर नही मिलता है। प्रवास करने के फलस्वरूप केवल 22 प्रतिशत श्रमिकों ने आर्थिक स्तर में परिवर्तन, 24 प्रतिशत ने जीवन स्तर में परिवर्तन होने की जानकारी दिया। इसी प्रकार 34 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रवास के बाद बचत की प्रवृति में वृद्धि होने की जानकारी दिया है।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि प्रवासी श्रमिकों में प्रवास की प्रवृति का प्रभाव उनके आय व स्थिति में बहुत कम पड़ता है जिसका कारण प्रवास स्थल पर मूलभूत सुविधाओं की कमी होना है। मूल निवास की तुलना में प्रवास स्थल पर षैक्षिक सुविधाओं की स्थिति संबंघी विवरण से यह ज्ञात होता है कि 75 प्रतिशत उत्तरदाता सपरिवार प्रवास करते है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी साथ होते है। प्रवास

स्थल पर श्रमिक झुग्गी में या फिर तंबू डालकर कार्य स्थल के आस–पास रहते है। निष्कर्ष से यह कहा जा सकता है कि पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों में पलायन करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। अत : परिकल्पना की पुष्टि होती है।

11. निष्कर्ष :– अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है –

प्रथम परिकल्पना के अनुसार पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की आर्थिक स्थिति निम्न हो सकती है, पर आधारित था। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष परिकल्पना की पुष्टि करता है क्योंकि अध्ययनगत समूह के शतप्रतिशत खेतीहर मजदूर गरीबी रेखा के नीचे आते है, अधिकांश उत्तरदाता कच्चे मकान में रहते हैं तथा अधिकांष कृषि मजदूरों के पास कृषि भूमि तो है तो उससे उन्हें वर्ष के 4–6 माह ही रोजगार मिल पाता है। परिणामतः उन्हें अपने जीवकोपार्जन के लिए गैर कृषि मजदूरी करना पड़ता है। कृषि तथा गैर कृषि मजदूरी से प्राप्त आय को 55 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार की आवश्यकता की दृष्टि से अपर्याप्त मानते हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की आर्थिक स्थति संतोषजनक नहीं कहीं जा सकती है। इस प्रकार पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की की आर्थिक स्थिति का प्रभाव बच्चों की षिक्षा पर पड़ता है। अतः परिकल्पना की पुष्टि होती है।

द्वितीय परिकल्पना के अनुसार पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की सामाजिक स्थिति निम्न हो सकती है, पर आधारित था। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष परिकल्पना की पुष्टि करता है क्योंकि खेतिहर श्रमिकों की सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं है। अध्ययन से प्राप्त तथ्य यह स्पष्ट करता है कि 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं के गांव में अधिकांश लोग निरक्षर हैं, 45 प्रतिशत उत्तरदता यह मानते हैं कि गांव का वातावरण अच्छा नहीं रहता हैं जबकि अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार बच्चें एवं गांव के लोग नषापान करते हैं। इसी प्रकार गाँव में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं के विषय में शत् प्रतिशत उत्तरदाताओं शुद्ध पेय जल, बिजली और सड़क का उचित प्रबंध होना बतलाया है, जबकि 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नाली की भी व्यवस्था होने की जानकारी दिया है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की सामाजिक स्थति संतोषजनक नहीं कहीं जा सकती है। इस प्रकार पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की की सामाजिक स्थिति का प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ता है। अतः परिकल्पना की पुष्टि होती है।

तृतीय परिकल्पना के अनुसार श्रम पलायन करने वाले परिवारों की पलायन करने की प्रवृत्ति हो सकती है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष परिकल्पना की पुष्टि करता है क्योंकि अध्ययन से यह ज्ञात हुआ हैं कि पलायन की प्रवृत्ति संबंधी उपरोक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि 75 प्रतिशत उत्तरदाता सपरिवार पलायन करते है, 52 प्रतिशत उत्तरदाता यह भी मानते है कि उनके साथ बच्चे भी जाते है। 73 प्रतिशत उत्तरदाता यह भी मानते है कि पालयन से बच्चे की शिक्षा प्रभावित होती है। अधिकांश 67 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि वर्ष भर मजदूरी नही मिलती है। इसमें से 60 प्रतिशत ने वर्ष में 3 माह मजदूरी मिलना बताया है, 30 प्रतिशत ने 6 माह और 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 8 माह मजदूरी गाँव मिलना बताया है।

अधिकांश उत्तरदाता वर्ष भर मजदूरी के अभाव में 48 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पलायन करने की जानकारी दिया है। अधिकांश 59 प्रतिशत पलायन स्थल पर कुषल मजदूर के रूप में कार्य करते है। प्रवासी श्रमिक मुख्य रूप से भवन निर्माण और ईंट भट्ठे में काम करते है। बहुत कम उत्तरदाता प्रवास स्थल पर आवास व्यवस्था को दयनीय मानते है।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि प्रवासी श्रमिकों में प्रवास की प्रवृति का प्रभाव उनके आय व स्थिति में बहुत कम पड़ता है जिसका कारण प्रवास स्थल पर मूलभूत सुविधाओं की कमी होना है। मूल निवास की तुलना में प्रवास स्थल पर शैक्षिक सुविधाओं की स्थिति संबंधी विवरण से यह ज्ञात होता है कि 81 प्रतिशत उत्तरदाता सपरिवार प्रवास करते है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी साथ होते है। प्रवास स्थल पर श्रमिक झुग्गी में या फिर तंबू डालकर कार्य स्थल के आस–पास रहते है। निष्कर्ष से यह कहा जा सकता है कि पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों में पलायन करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। अत : परिकल्पना की पुष्टि होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- Agrawal, Praveen & Pravin Ningia. (2005). “Immigration in Delhi: An over view”. *Demography India, 34* (1), 127-148.
- Arora, D.R and Kumar, Balbir (1980). Agricultural Development and Rural to migration, Deptt. of Economics and Socioogy.*Punjab Agricultural University, Ludhiana.*
- Bagchi, Jahnabi and Betal, H. R. (1977). “Population and Migration in West-Bengal”, *G.R.I.*, Vol. 39, 282-285.
- Bahara, D.M. (1969)." Intrnal migration in Rajasthan" *I.G.J*, IV-VI (1), 45.
- Bohara, D.M. (1969-71). Internal Migration in Rajasthan. *Indian Journal of Geography,* 4, 5-6.
- Bose, A. (1974). “Migration Streams in India in Studies in India’s Urbanization. *McGraw Hill,* New Delhi.
- Chandana, R. C. & M. S. Sidhu (1980). “Introduction to Population Geography”, *Kalyani Publishers*, New Delhi.
- Dasgupta, B. & R. Laishley (1975). “Migration from Villages”, *Economic and Political Weekly*, 10(42), 1952-63.
- Dasgupta, Geetisha & Ishita Dey. (2010). “State of research on forced Migration in the East and North-East”, *Economic & Political Weekly*, 45(21), 27-41.
- Ghosh, P. P. & Sharma, A. N. (1995). “Swasonal Migration in thr rural Labour in Bihar”, *Labour and Development*, 1(1), 118-135.
- Johnson. G. (1971). “The Structure of Rural Urban Migration Modls*”, East African Economic Review,* 21-28.
- Mukherjee, Shekhar. (1980). "Internal Migration and Rural stress in India - A micro level investigation", *N.G.I.J., 26,124*-143.
- Nangia, S. (1983)."Work study of female migrants before and after migration analysis", *N.G.J.L,* 2(2)*,* 39-45.
- Negi, P.S. (1983)."Trends of Ont-Migration in Tehri Garhwal", *G.R.I.L.,* 19(1), 68-71.
- Ravestien, E.G. (1889). "The Laws of Migration", *Journal of The royal Statistical Society.* 48(2), 198-99.
- Sharma, S.K. (1989). Patterns of In-migration in Madhya Pradesh, 1981, G.RJ. II (3).61-75.
- Srivastava, R (1998). Migration and the Labour Market in India, *The Indian Journal of Labour Economics.*41, 4.

- Tyagi, B. P. (1995-96). "Labour Economics and Social Welfare", *Jai Prakash nath & Co.,* Meerut-2, Seventh Edition.
- Yadava, K.N.S. & S. K. Singh. (1996-97)."Rural out-migration and its Economic Implications on migration House Holds in India: A Review", *The Indian Economic Journal.*44.
- Zachariah, K.C. (1859). “Migration to Greater Bombay 1941-1951”, The Indian Journal of Social Work, 20(3)